लिले (उत्तरी, फ्रांस)
नवम्बर ०८, २००६

सन्देश संख्या १७७

क्रियावानों के लिए मन्त्र

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।
धम्मं शरणं गच्छामि ।

बौद्ध–धर्म के इन मन्त्रों के अनुरूप क्रियावानों के लिए निम्नलिखित मन्त्र वरेण्य हैं :–

गुरूदेवो चरणम्
क्रियावानो परमम् ।
अध्यात्मो स्मरणम् ।

इन मन्त्रों का मर्माथ है – अन्तर–अस्तित्व में विभाजनरहित प्रक्रिया के प्रति समर्पण हो । वे क्रियावान जो समझदारी की ऊर्जा में प्रस्फुटित हो रहे हैं, मुझे अत्यन्त प्रिय हैं । स्वयं के जीवन्त–ग्रन्थ पर मनन करते समय इन तथ्यों पर ध्यान रखें –

१. छवि से अन्तदृष्टि की ओर, 'ऐसा होना चाहिए' से 'जो है' की ओर, कल्पना से तथ्य की ओर, मानसिक प्रतिक्रियाओं की अपर्याप्तता से गहरी अनुक्रियाओं की पर्याप्तता की ओर प्रस्थान करें ।
२. दुःख से मुक्ति चाहना की दुःख है । और दूसरा कोई दुःखनहीं होता। 'चाहना' और 'न चाहना', दोनों ही प्रज्ञा नहीं है ।
३. क्रियावानों में अनुबन्धित अहं–केन्द्र के दूर करने लायक कारकों का निरन्तर निष्कासन होते रहना चाहिए ।
४. एक क्रियावान, समुद्र में छलांग लगाने वाले नमक के खिलौना जैसा है ।
५. क्रियावानों का अपना पैर मजबूत (यानी की जीवन) होता है । उसे वैशाखी (अर्थात् उधारी अवधारणाओं) की आवश्यकता नहीं होती।
६. क्रिया समस्त प्रकार के 'बनने' को रोकती है तथा 'होने' की प्रक्रिया का प्रारम्भ करती है ।
७. क्रिया आपको खाली ढोलक बनाती है ताकि सही आवाज निकल सके जबकि उधारी अवधारणाओं के कचड़े से भरे ढोलक से डरावनी आवाज निकलती है ।
८. अहंकार और स्वार्थ से सद्गुण और सत्यनिष्ठा की ओर अग्रसर होना स्वाध्याय है ।
९. स्वाध्याय से सम्पत्ति दूर नहीं होती बल्कि सम्पत्ति के प्रति स्वामित्व की वृत्ति दूर होती है ।
१०. दुःख–दर्द और सुख की स्मृति ही कष्ट और तुष्टीकरण उत्पन्न करती है नवजात शिशु की शल्यक्रिया में एनेसथिसिया (संज्ञासून्यता) की जरूरत नहीं होती क्योंकि उसके पास दर्द की कोई पूर्व–स्मृति नहीं होती, अर्थात् वह कष्ट महसूस नहीं करता ।
११. ''मैं'' तकनीकी दुनिया में व्यावहारिक कार्यों के लिए है न कि विचार और इसके विभाजन से उत्पन्न भ्रामक 'विचारक' के समानान्तर साम्राज्य के निर्माण के लिए ।
१२. संसार का त्याग नहीं करना है वरन् केवल ''मैं'' से मुक्त होकर सहज होना है । लेकिन सहज होना सर्वाधिक दुष्कर है ।
१३. क्रिया पूर्वाग्रहों से मुक्ति की वैज्ञानिक पद्धति है, न कि उन्हें मजबूती प्रदान करने की ।
१४. विभेदकारी चित्तवृत्ति का अखण्ड सजगता में विलय ही क्रिया है।
१५. मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर और सिनेगॉग (यहूदी प्रार्थना घर), विश्वास–पद्धति रूपी उद्योग की दीवारें हैं जिसकी प्रत्येक ईंट मानवता के प्रति अपराध एवं अपराधबोध से निर्मित है ।
१६. मन द्वारा निर्मित भगवान का जब अवसान हो जाता है, तभी यथार्थ भगवान का उद्घाटन होता है ।
१७. 'सुख का अनुभव' अस्तित्व का आनन्द नहीं है ।
१८. अपने जीवन के मौलिक प्रश्नों के साथ बने रहें, दूसरों से प्राप्त उधारी प्रश्नों से परेशान मत हों।
१९. विद्यार्थी जानकारी संग्रह करते हैं जबकि शिष्य परस्पर प्रज्ञा की साझेदारी करते हैं ।
२०. अन्तर्दृष्टि को खोये बिना भी संसार में होना संभव है । बिना पूर्वाग्रह के निष्ठावान बने रहना भी सम्भव है ।
२१. जब कोई शरीर शून्यता से भरकर मुखर होता है तब उसके माध्यम से प्रभु ही बोलता है ।

।। 'मैं' के विलय की जय हो ।।